कुदरत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा हमारा अस्तित्व है। आत्मा चली गयी तो शरीर बेकार हो गया। अपने अस्तित्व को जान लेना ही सब कुछ जान लेना है। प्रश्न होता है कि ये कुदरत क्या है? कुदरत प्रकृति को कहते हैं, सृष्टि को कहते हैं, चौरासी लाख जीव योनियों का निवास स्थान प्रकृति है। कुदरत ही सबकी रक्षा करती है। मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है जिसका परिणाम है नई–नई बीमारियों का होना, प्रकृति में परिवर्तन होना, जलवायु का विषम होना आदि। यद्यपि समय–समय पर प्रकृति मानव को सुधार का संकेत देती रहती है लेकिन अहंकार के वशीभूत होकर के मानव उस संकेत को नहीं समझता है। कोरोना जैसी महामारी के मूल में प्रकृति के साथ हस्तक्षेप मुख्य कारण दिखाई देता है।

कुदरत पंचभूतों से बनी है। यह ब्रह्माण्ड ही कुदरत है। यहां सभी प्राणी अपने कर्मों के फल का भोग करने के लिए जन्म लेते हैं। जिसका जैसा कर्म रहता है वह वैसी योनि में जन्म प्राप्त करता है। शुभ कर्म करने वाला अच्छी योनि में जन्म प्राप्त करता है और बुरा कर्म करने वाला बुरी योनि में जन्म प्राप्त करता है। जन्म और मृत्यु की परम्परा अनादि है।

हमारे चारों तरफ पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश और वनस्पतियों का परिमण्डल व्याप्त है। इन्हीं से कुदरत की संरचना होती है। कुदरत को स्वच्छ रखने का अर्थ है–पर्यावरण को स्वच्छ रखना। पर्यावरण के संरचना में सभी तत्वों का बराबर योगदान है। जब मानव का उद्‌भव हुआ था, तब प्राकृतिक संसाधन मानव की जरूरतों को देखते हुए प्रचुर मात्र में उपलब्ध थे। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ी, अत्यधिक मात्रा में भोजन तथा आश्रय के लिये संसाधनों की जरूरत पड़ी और तब इन्हें पर्यावरण से अधिकाधिक रूप से प्राप्त किया गया। तेजी से बढ़ती जनसंख्या द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है। इस अत्यधिक दोहन का नतीजा मृदा, जैव विविधता में कमी और भूमि, वायु और जलस्रोतों के प्रदूषण के रूप में दिखायी पड़ रहा है।

अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण अवक्रमण के चलते यह मानव जाति और उसकी उत्तरजीविता के लिये अनेक खतरे उत्पन्न कर रहा है। प्रकृति में पारिस्थितिकी संतुलन पाया जाता है। विभिन्न जीवों के क्रियाकलाप प्रायः संतुलित होते हैं। अजैविक और जैविक घटकों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध इतना सधा होता है कि प्रकृति में एक प्रकार का संतुलन बना रहता है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है, मानव क्रियाकलापों के द्वारा इस संतुलन में हस्तक्षेप होता जा रहा है। अनियंत्रित मानव क्रियाकलापों के कारण पर्यावरण की क्षति हो रही है।

वन प्राकृतिक संसाधन हैं, लेकिन मनुष्य खेती करने के लिये और घर बनाने के लिये वनों को काटता जा रहा है। इसके अलावा वृक्षों को काटकर लट्ठों को अपने घर बनाने के लिये और फर्नीचर या ईंधन के रूप में प्रयोग कर रहा है। जिस दर से वृक्ष काटे जा रहे हैं, वह वृक्षों को उगाने की दर से काफी अधिक है और शीघ्र ही वन वृक्ष रहित हो जायेंगे। पेड़ों के वाष्पोत्सर्जन द्वारा पानी भी पर्यावरण में पहुँचता रहता है, जिससे वर्षा वाले बादल बनते हैं। पेड़ों की कटाई और वनों के काटे जाने के कारण उन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है। पौधों और वृक्षों की कटाई के कारण मृदा अपरदन को भी बढ़ावा मिलता है।

वन्य जीवों की प्रजातियों का विलुप्त होना बढ़ता जा रहा है। अनवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत जैसे कोयला, प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम पदार्थों को जिस तेजी से उपयोग किया जा रहा है, उसके उनके समाप्त होने की सम्भावना है। कोयला, लकड़ी, पेट्रोल आदि के अत्यधिक मात्र में जल जाने के कारण विषैली गैसें सल्फर डाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड और हाइड्रोकार्बन वायु में मिल जाती है। ये गैसें उद्योगों, विद्युत संयंत्रों, मोटर गाड़ियों और वायुयानों से भी निकलती हैं। ये विषाक्त गैसें वायु को प्रदूषित करती हैं जिनसे मानव स्वास्थ्य और पौधों पर दुष्प्रभाव पड़ता है। खानों से निकला अम्लीय जल कल–कारखानों, खेतों से निकले रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से निकले अपशिष्ट नदियों और दूसरे जलस्रोतों को प्रदूषित करते हैं। घरों और कल–कारखानों से निकलने वाले ठोस एवं द्रव अपशिष्टों से गाँवों, शहरों और औद्योगिक क्षेत्रें में दिन प्रतिदिन मृदा प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है।

बढ़ती जनसंख्या के लिये स्थान, आश्रय और उपयोगी वस्तुओं की आवश्यकता के कारण पर्यावरण पर एक अत्यधिक दबाव पड़ता है। इन सभी वस्तुओं को उपलब्ध कराने के लिये नाटकीय तरीके से भूमि का प्रयोग बदल गया है। यह पहले से ही ज्ञात है कि अनाज और फल वाली फसलों को उगाने के लिये जंगलों, वनों की कटाई की जाती रही है। वन और प्राकृतिक चारागाह, घास के मैदान को कृषि योग्य भूमि में बदल दिया गया है। आर्द्र भूमि को खाली और मरुभूमि को सींचा गया है। इन परिवर्तनों के कारण अत्यधिक मात्र में खाद्यान्न और अत्यधिक मात्रा में कच्चे माल का उत्पादन हुआ। लेकिन ऐसा करने के कारण प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो गये और प्राकृतिक सुंदरता में एक भयावह बदलाव आ गया है। कुदरत प्रकृति के माध्यम से ईश्वरीय सत्ता का संकेत देती है।